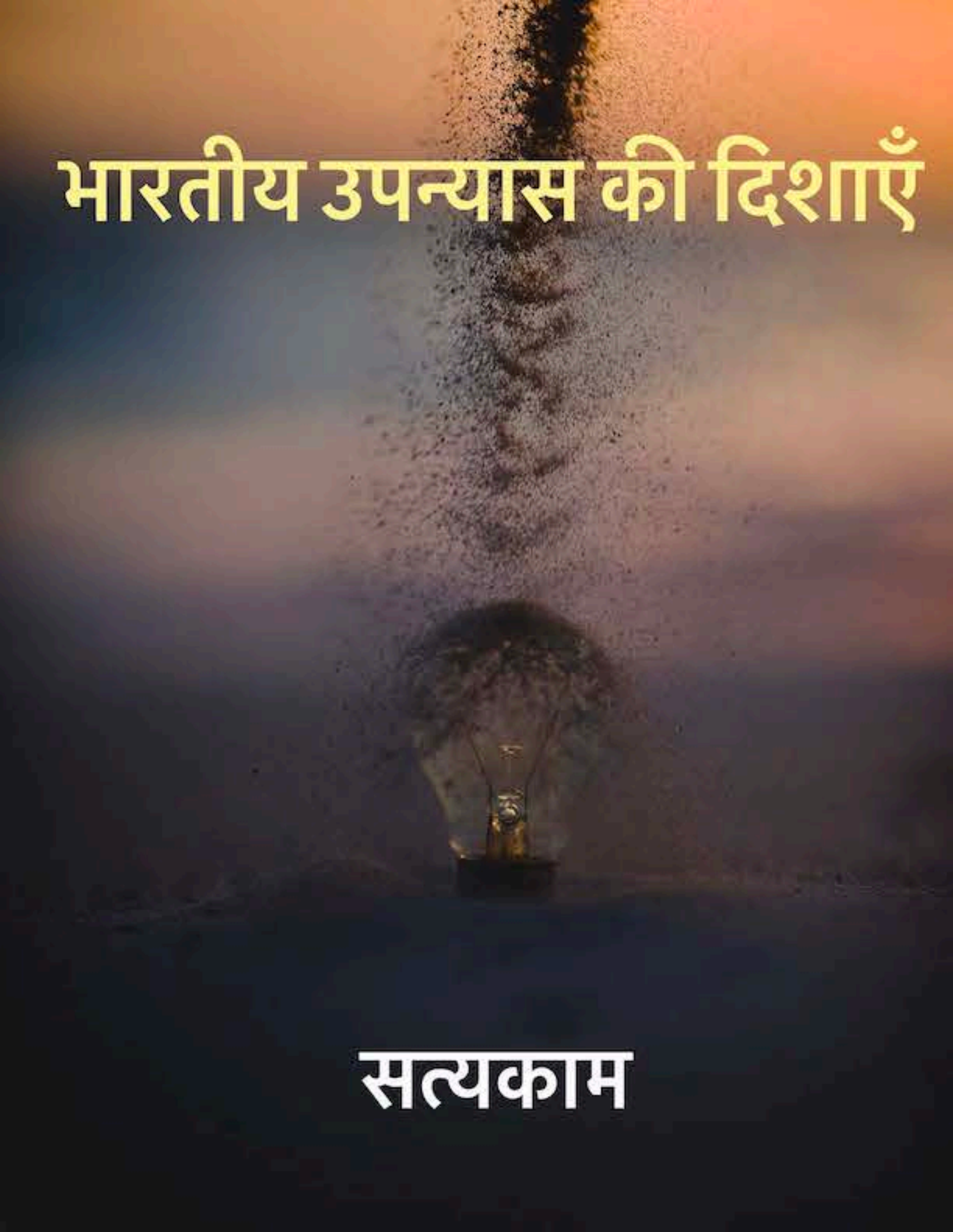

भारतीय उपन्यास की दिशाएँ

सत्यकाम

भारतीय उपन्यास की दिशाएं

सत्यकाम

सत्यकाम

2 दिसंबर, 1959 को जन्मे सत्यकाम समकालीन हिंदी आलोचना में एक महत्वपूर्ण उपस्थिति है। हिंदी की लब्ध प्रतिष्ठ पत्रिकाओं में 200 से अधिक शोध पत्र, आलेख, समीक्षाएं व संस्मरणों के प्रकाशन से चर्चित सत्यकामजी सोफिया विश्वविद्यालय, बल्गारिया में विजिटिंग प्रोफेसर रहें।

'उपन्यास : पहचान और प्रगति', 'आलोचनात्मक यथार्थवाद और प्रेमचंद' नई कहानी : नए सवाल', 'माटी की महक : विवेकी राय व्यक्तित्व एवं कृतित्व' (संपादन), 'प्रेमचंद की कहानियां पुनरावलोकन' (संपादित) व वितुशा की छांव में (यात्रा संस्मरण) आपकी प्रमुख प्रकाशित पुस्तकें। आपकी उल्लेखनीय अनुवाद कृतियां हैं 'महात्मा गांधी, कांग्रेस और भारत का विभाजन', चलकर राह बनाते हम', 'भारत की समाचारपत्र क्रांति' 'सांप्रदायिक राजनीति का आख्यान' आपकी उल्लेखनीय अनुवाद कृतियां हैं। 'भारतीय उपन्यास की दिशाएं आपकी नवीनतम पुस्तक है।

संप्रति : प्रोफेसर, हिंदी संकाय, मानविकी विद्यापीठ 'समीक्षा' त्रैमासिक के अवैतनिक संपादक।

भारतीय उपन्यास की दिशाएं

सुप्रतिष्ठित आलोचक सत्यकाम का नवीनतम ग्रंथ है 'भारतीय उपन्यास की दिशाएं'। पारंपरिक सोच से हटकर इस ग्रंथ में इस अवधारणा को सिद्ध किया है कि भारतीय उपन्यास अंग्रेजी उपन्यास की नकल नहीं है।

लेखक पूरे आत्मविश्वास और शोध के आधार पर यह स्थापित करते हैं कि भारत में उपन्यास के उदय के समय हमारी एक समृद्ध क्या-परंपरा मौजूद थी। आलोचक की नजर भारतीय उपन्यास के उदय से लेकर हिंदी उपन्यास के उदय तक और लोकजीवन से लेकर राष्ट्रीय जीवन व संस्कृति के रूपक तक गंभीरता से काम करती नजर आती है। वह रवीन्द्रनाथ, प्रेमचंद और फकीर मोहन सेनापति ही नहीं, मराठी, बांग्ला, उर्दू और अन्य भारतीय भाषाओं के उपन्यासों से भी प्रमाण जुटाते हैं। लेखक की मान्यता है कि भारत में जैसे जैसे उपन्यास अपना स्वरूप विकसित करता गया, उसके द्वारा नए विमर्शों की तलाश निरंतर की गई।

यह कहना अनिवार्य है कि सत्यकाम का आलोचक 'भारतीय उपन्यास की दिशाएं' जैसे ग्रंथ के माध्यम से एक नई विवेचना प्रस्तुत करता है, जिसे विषय के शोधार्थी और अध्यापकों को गंभीरता से लेना होगा। हिंदी में ऐसे ग्रंथ बहुत कम प्रकाशित हुए हैं।

बाबूजी के चरण कमलों में समर्पित

अनुक्रम

पुरोवाक्	6
भारतीय उपन्यास का उदय	10
हिंदी उपन्यास का उदय	50
भारतीय उपन्यास और लोकजीवन	79
भारतीय उपन्यास : राष्ट्रीय जीवन और संस्कृति के रूपक	111
भारतीय उपन्यास में स्त्री विमर्श	148
भारतीय उपन्यास में दलित विमर्श	198
कथा में इतिहास का दखल	221
नए विमर्शों में झांकती कथा	300
संदर्भ ग्रंथ सूची	327

पुरोवाक्

भारत में उपन्यास का जन्म 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ। 'उपन्यास' भले ही भारतीय साहित्य के लिए एक नयी विधा हो, परंतु कथा से भारत का पुराना रिश्ता रहा है। उपन्यास में भी एक कथा होती है और कथा की यह परंपरा महाभारत से लेकर आज तक निरंतर चलती आ रही है। इसलिए जब यह कहा जाता है कि भारत में उपन्यास के जन्म के लिए अंग्रेजी साहित्य उत्तरदायी है तो मन में कई सवाल खड़े होते हैं। आरंभ में एक पुस्तक भारतीय उपन्यास के उदय से संबंधित लिखी गई, जिसका नाम है-'द नॉवेल इन इंडिया' जिसके लेखक हैं - टी.डब्ल्यू. क्लार्क। इस पुस्तक में इस बात पर जोर दिया गया कि भारत में उपन्यास अंग्रेजी उपन्यास की नकल है और इनमें मौलिकता नहीं है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य का इतिहास लिखते समय भी यही बात दोहराई और उन्होंने हिंदी के आरंभिक उपन्यासों में उन्हीं को उपन्यास माना, जो अंग्रेजी ढंग से लिखे गए हों। जब हम भारतीय उपन्यास में लिखे जा रहें आरंभिक उपन्यासों को गौर से पढ़ते हैं तो देखते हैं कि इनमें कहीं भी 'अंग्रेजियत' नहीं है। यथार्थ के प्रति वे आग्रह नहीं हैं, जो अंग्रेजी ढंग के उपन्यासों की विशेषता मानी जाती है।

भारतीय कथा परंपरा मिथक से शुरू होती है। यह प्रसिद्ध है कि भगवान शिव सबसे पहले कथा वाचक (कथक) थे, जिन्होंने अपनी पत्नी पार्वती को एक महाकाव्यात्मक कथा सुनाई थी, जिसे गुणाद्य ने वृहत कथा के रूप में लिपिबद्ध किया। कथा की यह परंपरा भारत में किस्सा, कहानी, चरित, कादम्बरी, दास्तान आदि रूपों में सदियों से मौजूद थी, जब 'उपन्यास' का नामो-निशान नहीं था। भारतीय कथा परंपरा में आख्यानों की एक लंबी परंपरा मिलती है। इस प्रकार के आख्यानों में ऐतिहासिक कथाएं कही जाती रही हैं। महाभारत, रामचरित मानस, हर्षचरित, कादम्बरी, दशकुमारचरित भारत में आख्यान परंपरा की कुछ उपलब्धियां हैं, जिनमें लोक कथाओं और कल्पना का मेल है। निश्चित रूप से इनकी शैली काव्यात्मक है, परंतु यह काव्य नहीं है, बल्कि कथाएं हैं, जो वर्णनात्मक शैली में लिखी गई हैं। इसे आख्यानपरक शैली भी कहते हैं। भारतीय भाषाओं में कथा और आख्यायिका जैसे शब्द सीधे संस्कृत से आए हैं। कथा में कल्पना का समावेश ज्यादा होता है और आख्यान से उम्मीद की जाती है कि वह तथ्यपरक और ऐतिहासिक होगा। हालांकि आख्यान को इतिहास के रूप में पढ़ने के

कई खतरे भी हैं, क्योंकि कवि बार-बार इसमें अपनी कल्पना मिला देता है। यदि हम हिंदी क्षेत्र को देखें तो पृथ्वीराज रासो, कीर्तिलता और कीर्तिपताका, रामचरित मानस और पदमावत जैसी कथाओं में यदि हम इतिहास ढूंढने लगें तो मुश्किल होगी। इसमें इतिहास का सहारा लेकर कवि ने एक कथा कही है, उपन्यासकार भी तो यही करता है। ऐतिहासिक उपन्यास में वह इतिहास को आधार बनाता है और उसके सहारे अपनी कल्पना का भवन तैयार करता है।

भारत में जब उपन्यास का उदय हुआ तो भारत के उपन्यासकारों के पास यह समृद्ध परंपरा थी, परंतु विशेष परिस्थितियों के कारण 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ये कथा परंपराएं एक नया रूप ग्रहण करने लगीं। प्रौद्योगिकी के विकास के कारण किताबें छपने लगीं। शिक्षा के लिए कथा का सहारा लिया गया और एक पढ़ा-लिखा वर्ग भी तैयार हुआ। इस प्रकार पुस्तकें भी छपने लगीं और एक पाठक वर्ग भी तैयार हुआ। भारत में उपन्यासों का आरंभ तो शिक्षा-दीक्षा के लिए हुआ, लेकिन इसने अपना जो रूप विकसित किया, वह बिल्कुल अनोखा था। शैली और वस्तु; दोनों भारतीय रहीं जैसे रवीन्द्रनाथ टैगोर ने जब 'गोरा' लिखा या प्रेमचंद ने 'गोदाम लिखा या फकीर मोहन सेनापति ने 'छह बीघा जमीन' लिखी तो उनके सामने एक बड़ा प्रश्न अपने राष्ट्र की खोज का था। भारत गुलाम था और जब तक यह आजाद नहीं हुआ, तब तक हमारी अपनी कोई स्वतंत्र पहचान नहीं थी। इसलिए भारत के आरंभिक उपन्यासकारों ने उपन्यासों के माध्यम से भारत की खोज करनी शुरू कर दी और यह केवल संयोग ही नहीं है कि भारत की पहली आजादी की लड़ाई 1857 में हुई थी और इसके बाद भारत में उपन्यास तेजी से लिखे जाने लगे।

मराठी में 'यमुना पर्यटन' लिखा गया, जिसमें विधवा विवाह की वकालत की गई। उर्दू में ‘उमरावजान' लिखा गया, जिसमें एक वेश्या को नायिका के रूप में चित्रित किया गया और उसके जीवन के दर्द को स्त्री की मुक्ति के रूप में चित्रित किया गया। ‘सरस्वतीचंद्र' लिखा गया, जो एक महाकाव्यात्मक उपन्यास है और जो स्त्री के प्रेम करने के अधिकार को स्थापित करता है। आरंभिक भारतीय उपन्यासों में बदलते समाज में स्त्रियों की भूमिका को केंद्र बनाया गया। प्रेमचंद या फकीर मोहन सेनापति ने इस केंद्रीयता को और भी विकसित किया। हिंदी में 'देवरानी-जेठानी' की कहानी लिखी गई, जो एक स्त्री के शिक्षित होने के महत्व को प्रतिपादित करती है।

आरंभिक भारतीय उपन्यास उपदेशाख्यान शैली में लिखे गए, यथार्थवादी शैली में नहीं। प्रेमचंद भी एक उपदेशाख्यान शैली में लिखने वाले उपन्यासकार हैं। 'देवरानी-जेठानी' की कहानी जो हिंदी का पहला उपन्यास है उपदेशाख्यान शैली का एक सर्वोत्तम उदाहरण है। पूरे उपन्यास में एक भी अर्ध-विराम और विराम का चिह्न नहीं है; ऐसा लगता है कि कथा वाचक श्रोताओं को कथा सुना रहा है।

आरंभिक उपन्यासों में दलित जीवन को लेकर भी उपन्यास लिखे गए, जिसमें इन्द्र बसावड़ा का उपन्यास 'घर की राह' विशेष ध्यान आकृष्ट करता है। प्रेमचंद ने 'रंगभूमि' में एक दलित को ही उपन्यास का केंद्रीय पात्र बनाया है। दया पवार ने 'अछूत' यू.आर. अनंतमूर्ति ने 'संस्कार' और गोपीनाथ मोहंती ने 'परजा' लिखकर इसी परंपरा को आगे बढ़ाया है।

इतिहास भारतीय उपन्यास का एक प्रिय विषय रहा है और इतिहास और अतीत के वर्णन द्वारा भारतीय उपन्यासकार ने भारतीय उपन्यास को एक नयी ऊंचाई दी है। भैरप्पा, शिवाजी सावंत, हजारी प्रसाद द्विवेदी, विश्वास पाटिल जैसे अनेक उपन्यासकारों ने ऐतिहासिक उपन्यास लिखकर इसमें भारतीयता की खोज की है। इसे हम राष्ट्र की खोज भी कह सकते हैं।

उपन्यास अपना स्वरूप विकसित करता गया और इसके द्वारा नए विमर्शों की तलाश की गई। आजादी के बाद जो दो विमर्श बहुत तेजी से उभरे; वे हैं दलित विमर्श और स्त्री विमर्श। ध्यातव्य है हिंदी उपन्यासों ने इन्हीं विमर्शों के साथ अपनी शुरुआत की थी। अब भारतीय उपन्यास किसी भी सीमा में नहीं बंधा है, न शैली का बंधन है, न शिल्प की रुकावट। विषय भी असीम है और भारतीय उपन्यास समकालीनता से डटकर मुकाबला कर रहा है। आजादी से पहले भी साम्राज्यवादी शक्तियों से मुकाबला कर रहा था, इन्हें बेपर्द कर रहा था और आजादी के बाद भी लगातार प्रजातंत्र के खोखले होते जाने की कथा सुना रहा था। 'मैला आंचल' और 'राग दरबारी' ऐसी ही रचनाएं हैं, जो सच्चाई को बिना लाग-लपेट के प्रस्तुत कर देती हैं। भारतीय उपन्यास आज मजबूती के साथ जमीन पर खड़ा है और यह उसी तरह पूर्णत: भारतीय है, जिस तरह भारत में रहने वाला हर व्यक्ति।

प्रस्तुत पुस्तक भारतीय उपन्यास को इसी दृष्टि से परखने का प्रयास है। बांग्ला में लिखे 'आलालेर घरेर दुलाल' से लेकर अद्यतन उपन्यासों की पड़ताल करते हुए भारतीय उपन्यास की आत्मा को पहचानने की कोशिश